पाठ - 2 الدرس الثاني - هندي

मौत الموت

2. मौत कब आयेगी इसका पता नहीं चलता। इसका पता अल्लाह क सिवा किसा का भा नहा हाता। कोई आदमी न तो यह जानता है कि उसकी मृत्यु कब होगी, क्योंकि ये ग़ैबी चीज़ें है जिसे केवल अल्लाह ही जानता है।

3. जब मौत आएगी तो उसे दूर करना, समय को टाल देना, या मौत से भाग जाना संभव नहीं है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः यानी, ﴿وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ فَإِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُونَ سَاعَةً وَلَا يَسْتَقْدِمُونَ﴾

और हरेक गिरोह के लिए एक अवधि सुनिष्चित है, सो जिस समय उनकी अवधि पूरी हो जायेगी, उस समय एक घड़ी न पीछे हट सकेगी और न आगे बढ़ सकेगी। (सूरह अल आराफ़ आयत 34)

4. मोमिन को जब मौत आती है तो उसके पास मलकुल मौत अच्छी शक्ल व सूरत और अच्छी सुगन्ध के साथ आते हैं और मलकुल मौत यानी मौत के फ़रिषते के साथ रहमत के फरिषते भी आते हैं जो उसे जन्नत की शुभसूचना सुनाते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ

यानी, ''वास्तव में जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है और फिर उसी पर जमे रहे उनके पास फ़रिषते यह कहते हुए आते हैं कि तुम कुछ भी आशंका और ग़म न करो बल्कि उस जन्नत की शुभसूचना सुन लो जिसका तुमसे वादा किया गया है। (सूरह फुस्सिलत आयत 30)

अलबत्ता काफिर इंसान के पास मौत का फ़रिष्ता डरावनी शक्ल, काली कलौटी सूरत और विभत्सय रूप में आता है और उसके साथ अज़ाब के फ़रिषते भी आते हैं और अज़ाब की सूचना देते हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः ﴿وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَالْمَلَائِكَةُ بَاسِطُو أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُوا أَنْفُسَكُمُ الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ﴾

यानी, ''और यदि आप उस समय देखें जबकि ये ज़ालिम लोग मौत की सख़्तियों में होंगे और फ़रिषते अपने हाथ बढ़ा रहे होगें कि हां, अपनी जानें निकालो। आज तुमको ज़िल्लत की सज़ा दी जायेगी। इस वजह से कि तुम अल्लाह तआला के जिम्मे झूठी बातें लगाते थे और तुम अल्लाह तआला की आयतों से तकब्बुर (घमंड) करते थे। (सुरह अनआम 93) जब मौत आती है तो सच्चाई ज़ाहिर हो जाती है। और हर इंसान का मामला खुल जाता है। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

यानी, ''यहां तक कि जब उनमें से किसी को मौत आ जाती है तो कहता है, ऐ मेरे पालनहार! मुझे वापस लौटा दे कि अपनी छोड़ी हुई दुनिया में जाकर नेक आमाल कर लूं, कदापि ऐसा नहीं होगा। यह तो केवल एक कथन है जिसका यह क़ायल है। उनके पीठ पीछे तो एक पर्दा है, उनके दोबारा जी उठने के दिन तक। (सूरह अल मोमिनून आयत 99–100) जब मौत आती है तो काफ़िर और गुनहगार इंसान दुनियावी ज़िन्दगी में वापस जाना चाहता है ताकि वह नेक काम कर सके, लेकिन समय निकल जाने के बाद निदामत किसी काम की न होगी। अल्लाह तआला फ़रमाता हैः

यानी, ''ज़ालिम लोग अज़ाब को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस जाने की कोई राह है। अल्लाह तआला का अपने बन्दों पर बड़ा रहम व करम है कि मौत से पहले जिस इंसान की अंतिम बोली, ''ला इलाहा इल्लल्लाह होगी तो वह जन्नत में दाखिल होगा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः

[दुनिया में जिस इंसान का आखिरी कलाम ''ला इलाहा इल्लल्लाह होगा वह जन्नत में दाखिल होगा। इसका कारण यह है कि इस कठिन समय में एक इंसान इख़्लास से ही इस कलिमा को कहेगा। अलबत्ता जो मुख्लिस नहीं होगा, वह मौत की परेशानियों की शिद्दत की वजह से भूल जायेगा। इसी लिए मृत हालत में पड़े व्यक्ति के पास मौजूद लोगों के लिए सुन्नत है कि वह उसे ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ने को प्रेरित करे। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हैः لَقِّنُوا مَوْتَاكُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ अपने मुर्दों को ''लाइलाह इल्लल्लाह दोहराने की तलक़ीन किया करो। (सही मुस्लिम 916)

अलबत्ता इसका आग्रह न करें, ताकि वह उकता कर कोई अनुचित बात जुबान से अदा न कर दे।